Patrika (Indore), 14th September 2020, *Patrika Plus*, Page-7

हमारे यहां हिंग्लिश का ज्यादा चलन, इसलिए हम आइआइटी में हिंदी पत्राचार को बढ़ा रहे

हमारे यहां हिंग्लिश का चलन ज्यादा है, कारण हिंदी भाषा ने अपने अंदर कई भाषाओं के शब्द समाहित कर लिए हैं। यदि हम तकनीकी क्षेत्र में हिंदी को बढ़ावा देना चाहते हैं तो इसके लिए हिंदी विशेषज्ञों को एक शब्दकोष तैयार करना चाहिए। जर्मनी, फ्रांस, चायना सहित कई देशों में थीसिस अपनी भाषा में ही लिखी जाती है, इसका कारण उनके पास अपनी विकसित शब्दावली है। हिंदी में कई लोग थीसिस लिखने का प्रयास कर रहे हैं। प्रतिदिन प्रयोग में लिए जाने वाले शब्दों के हिंदी में शुद्ध सरल शब्द विकसित किए जाएं और उनके प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए। तकनीकी के क्षेत्र में हिंदी भाषा के प्रयोग को लेकर काफी प्रयास किया जा रहा है। पॉलीटेक्निक की किताबें हिंदी में लिखी जा रही हैं। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा में पढ़ने को लेकर जोर दिया जा रहा है। हिंदी में कई कलिष्ट प्रयोग किए जा रहे हैं। आम बोलचाल की भाषा में सरल हिंदी भाषा के शब्द विकसित कर बच्चों को उन्हें सिखाया जाना चाहिए। आइआइटी इंदौर ने हमेशा हिंदी को प्रमुखता दी है। हमारे पास एक राजभाषा हिंदी समिति है जो यह सुनिश्चित करती

है कि संस्थान के सभी वर्ग अपनी हिंदी कार्य क्षमता बढ़ाएं। हमने यह सुनिश्चित किया है कि संस्थान में उपयोग किए जाने वाले सभी मोहर और नाम के बोर्ड हिंदी में भी छपे हैं। हम हिंदी में पत्राचार को भी बढ़ावा दे रहे हैं।

– प्रोफेसर निलेश कुमार जैन,
कार्यवाहक निदेशक, आइआइटी इंदौर